Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX, Issue - I,
January - March - 2020
HINDI PART - I

Impact Factor / Indexing
2019 - 6.399
www.sjifactor.com

Ajanta
Prakashan

CONTENTS OF HINDI PART - I

अ.क्र.	शोधालेख एवं शोधकर्ता	पृष्ठ क्र.
२७	विज्ञापन क्षेत्र और अखबार **डॉ. संग्राम सोपानराव गायकवाड**	१२९-१३१
२८	संचार माध्यम और अनुवाद **डॉ. श्वेता चौधारे**	१३२-१३६
२९	हिंदी मे सूचना प्रौद्योगिकी और कम्प्यूटर का महत्व **श्री. किशोर श्रीमंत ओहोळ**	१३७-१३९
३०	जनसंचार माध्यमो की हिन्दी (विज्ञापन क्षेत्र के विशेष परिपेक्ष में) **अश्विनी सहदेवराव करपे**	१४०-१४६
३१	जनसंचार माध्यम और हिन्दी **डॉ. बळीराम संभाजी भुक्तरे**	१४७-१५०
३२	जनसंचार माध्यमो की हिंदी भाषा **प्रा. डॉ. संजय नामदेवराव गडपायले**	१५१-१५४
३३	विज्ञापन और हिन्दी भाषा **प्रा. कल्याणकर आर. बी.**	१५५-१५८
३४	प्रयोजनमूलक हिंदी के रूप, सीमा और संभावनाएँ **प्रा. डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी**	१५९-१६४
३५	रोजगारोन्मुख हिंदी **प्रा. डॉ. वडचकर शिवाजी**	१६५-१६८
३६	प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप **डॉ. संजीवकुमार नरवाडे**	१६९-१७६
३७	रोजगारोन्मुख हिंदी **प्रा. श्रीमंत जगन्नाथ गुंड**	१७७-१८०
३८	जनसंचार माध्यमो की हिंदी **प्रा. डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड**	१८१-१८२
३९	राष्ट्रीय भावना से प्रभावित विज्ञापन और संगीत **प्रा. डॉ. महावीर उदगीरकर**	१८३-१८६
४०	विज्ञापन क्षेत्र **शक्तिवीर सिंह**	१८७-१९३

Lala Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

VOLUME - IX, ISSUE - I - JANUARY - MARCH - 2020
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 6.399 (www.sjifactor.com)

३५. रोजगारोन्मुख हिंदी

प्रा. डॉ. वडचकर शिवाजी
कै. रमेश वरपुडकर महाविद्यालय, सोनपेठ ।

मीडिया समाज का संवाद माध्यम है | हर व्यवस्था में यह संवाद कई स्तर पर लगातार चलता रहता है | एक का अनेक से, अनेक का एक से, सरकार का जनता से और जनता का सरकार से आदि | जब तक यह संवाद ठीक तरीके से रहता है, व्यवस्था ठीक रहती है, मगर जब भी इस सहज संवाद में बाधा आ जाती है, तो व्यवस्था मे बदलाव होना तय होता है | आज के युग के | मिडिया का युग कहा जाता है | यह सूचनाओं के विस्फोट का युग है | आज हमारे ईर्द – गिर्द मीडिया का प्रभाव है | फिर वह चाहे प्रिंटमीडिया हो या दृश्य – श्रव्य मीडिया हो, उसने हमारे जीवन में अतिकृमण किया है ! यह हमारे जीवन मे खान – पान, रहन – सहन से लेकर हमारी सोच तक पहुँच चुका है | मीडिया ने समूचे विश्व को एक ग्राम मे समेटने की पहल की है जो काफी हद तक सफल हो चुकी है | मीडिया ने सरहदों की बंदिशों को लाँघ दिया है ! मीडिया के द्वारा हमारे समाज जीवन में और जीवन स्तर में बदलाव आया है | जो काफी हद तक सकारात्मक रहा है, कुछ हद तक नकारात्मक भी है | यह मीडिया का गहरा बदलाव केवल टेक्नोलॉजी के कारण ही है | आज एक तरफ परम्परागत मीडिया है जैसे – समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, टी.वी. रेडियों आदि तो दूसरी तरफ न्यू मीडिया जैसे फेसबुक, टि्वटर, यूटयूब वाट्सप आदि | परम्परागत मीडिया के बारे में हम जानते है, मगर नए मीडिया ने संवाद की दुनिया को आज फेलाव का एक नया धरातल दे दिया है |

मीडिया की जान भाषा है | सरल अर्थ में कहा जाय तो मीडिया एक माध्यम है | जिसका काम सूचनाओं विचारों आदि को लोगों तथा पठकों तक पहुँचाना है | लेकिन इस माध्यम का माध्यम भाषा है | मीडिया में प्रयुक्त भाषा के व्दारा हमारे रोजमर्रा के जिवन में हिस्सा बनाया है | मीडिया ने अपने आप मे एक 'अर्थतंत्र' बनाया है | इस 'अर्थतंत्र' को जो जुडे है या जुडने लगे है उनका अपना अर्थ स्तर बेहतर बना हुआ है | अंत: मुझे कहना है कि हिंदी भाषा को पढने, जानने एवं समझने वाले अपने आप को मीडिया से जोडकर अपना अर्थस्तर बेहत्तर बना सकते है | मीडिया में हिंदी भाशा को पढने या जाननेवालों के लिए रोजगार के असीम अवसर उपलब्ध है | वर्तमान दौर में मीडिया के माध्यम से हिंदी पुरी दुनियाँ में पहुँच रही है | बहुराष्ट्रीय कंपनियों दक्षिण एशिया के बाजार में प्रवेश करने हेतु हिंदी की उपयोगिता में उत्तरोत्तर बढोत्तरी करने जा रही है ! हमारी अर्थव्यवस्था तेज गति से विकसित हो रही है | हमारी तेजगतीसे बढ ती हुई अर्थव्यवस्थाने विश्व को अपनी ओर देखने के लिए विवश कर दिया है ! हमारा देश हिंदी की मानसिकता से अभी भी जूझ रहा है, जब कि दुनिया मे हिंदी की लोकप्रियता और उपयोगिता का विश्लेषण हिंदी को उर्जापुर्ण भविष्य की ओर ले जा रहा है | इसमे जनसंचार माध्यम और जनसंचार

माध्यमों में हिंदी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने लगी है | समाचारपत्र, पत्र – पत्रिकाएँ, पोस्टर, रेडियो, टेलिविजन, चलचित्र, मोबाइल, संगणक, इंटरनेट, सिनेमा आदि इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है |

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

अनुवाद में रोजगार

हमारा देश बहुभाषी देश है | संविधान व्दारा भारत की तकरीबन बाईस प्रांतिय भाषाओं को स्वीकृति प्रदान की गई है | देश में केंद्र और राज्य के कामकाज के रुप मे हिंदी और अंग्रेजी प्रयुक्त होती है | हर प्रांत की अपनी भाषा भी अपने – अपने प्रांत में उपयोग में लाई जाती है | यानी हिंदी अंग्रेजी और प्रांतीय भाषा का पूरा ज्ञान रखनेवाले को अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के अवसर प्राप्त होते है | दुभाषिये के रुप में विभिनन मंत्रालयों में रोजगार के सुअवसर प्राप्त किए जा सकते है |

आजकल अन्य भाषाओं की फिल्मों को डब किया जा रहा है | या एक साथ कई भाषाओं में फिल्मों का निर्माण किया जा रहा है | अनुवाद व्दारा विदेशी फिल्मों को हिंदी या अन्य प्रांतीय भाषा मं डब कर फिल्म जगत वाले अच्छा खासा व्यवसाय कर रहे हैं और ये सब अनुवाद और कुशल अनुवादक के कारण संभव हो रहा है | यांनी अनुवाद के लिए फिल्म जगत में भी रोजगार के अवसर प्राप्त होते है | अनुवाद अर्थोपार्जन का वेहतरीन रोजगार का माध्यम साबित हो सकता है ! वर्तमान समय में अनेक विश्वविद्यालयों में अनुवाद के डिप्लोमा कोर्स सुरु किये है | शिवाजी विश्वविद्यालय,, कोल्हापुर, महात्मा गांधी विश्वविद्यालय, वर्धा, पुणे विश्वविद्यालय पुणे आदि |

टेलीविजन में रोजगार

टाज सम्पुर्ण दुनिया में टेलीवीजन में रोजगार के अवसर भी उपलब्ध होने लगे है | पहले – पहले यह काम सीमित था | लेकिन आज टेलीवीजन के चैनलों की संख्या दिन ब दिन बढने लगी है | हर भाषाओं के समान हिंदी चैनलों की धारावाहिक कार्यक्रमों की भरमार चल रही है | प्रत्येक चैनलवालें को लगता है की मेरे चैनलपर बेहतरीन कार्यक्रम प्रसारित हो तो उससे अच्छा इनकम मिल सकता है | यहाँ बहुभाषी व्यक्ति को अपने कैरियर को ऊँची उडान दे सकता है | यहाँ जरुरी है कि उसे भाषा का सही ज्ञान होने के साथ पूरे आत्मविश्वास से उसे व्यक्त करने का तरीका आता हो, ये सभी क्रियाएँ निरंतर अभ्यास करने से सीखी जा सकती है |

हिंदी फिल्म उद्योग में रोजगार

फिल्म उद्योग में हिंदी भाषा का अध्ययन करनेवालों के लिए भी रोजगार के अवसर प्राप्त हो चुके है | फिल्म उद्योग में भाषा के ज्ञान के साथ फिल्म को भी समझने का ज्ञान होना आवश्यक है | जो इसमें काम करना चाहता है, वह अपनी क्षमता, रचनाशीलता के साथ पटकथा का लेखन, संवाद लेखन, गीतों का लेखन, फिल्म की समीक्षा अभिनयता आदि क्षेत्र में काम कर सकता है | प्रत्येक दृश्य एवं वाक्य लिखने के बाद उसे दर्शाया कैसे जाय इसकी जानकारी होना जरुरी है | यहाँ पर कल्पनाओं को ऊँची उडान देना भी आवश्यक होता है | पटकथा लेखन के साथ गीत लेखन का कार्य भी किया जा सकता है | गीत लिखने के लिए सिर्फ कविता का काफी नही होता है | गीत लिखने की एक तकनीक है | गीत कभी – कभी दृश्य के अनुरुप एवं पररिस्थिती के अनुरुप लिखना पडता है |

कहने का तात्पर्य यह है कि हिंदी का अध्ययन करनेवाला उसे जानने, समझने वाला हिंदी [illegible] में रोजगार का अवसर प्राप्त कर सकता है |

विज्ञापन लेखन

विज्ञापन आधुनिक प्रचार माध्यम है | विज्ञापन की व्याप्ति हर जगह है | आत्म विज्ञापन से लेकर वस्तु के विज्ञापन और चुनाव में प्रत्याशियों को विज्ञापन तक यह फैल गया है | विज्ञापन बाजारवाद की मुख्य प्रकृति और आधार है | जिसका मूल उद्देश है उपभोग्य वस्तुओं के प्रचार प्रसार व्दारा विशाल ग्राहक और उपभोक्ता वर्ग तैयार करना है | उनके अन्दर उत्कंठा निर्माण करना | युग की दौड में शरीक होने के लिए विज्ञापन को स्वीकारना ही होता है इसके बिना प्रतिस्पर्धा में हमारा व्यावसायिक क्षेत्र पिछड जाएगा | विज्ञापन से मार्केट में अपनी पकड मजबूत कर सकते है | अन्य उत्पादनों से बेहतर बताकर ही हम अपने उत्पादन की शाख बना सकते हैं | विज्ञापन के व्दारा ग्राहकों मे विश्वसनीयता बनानी पडती है, साथ ही साथ अपनी प्रामाणिकता को दर्ज करानी होती है | हिंदी मे विज्ञापन अधिक आने से हिंदी विज्ञापनों के लिए खूब अवसर उपलब्ध है | उत्पादन करनेवाली कम्पनियाँ चाहे देशी हों या विदेशी | बाजार में गए बगैर उनका फायदा संभव नहीं है | आम जनजीवन तो भारतीय भाषाओं के बीच ही पसरा हुआ है | अंग्रेजी बाजार में नहीं टिक सकती | उत्पादनों को बेचना है तो कम्पनी की नीति में हिंदी को लाना होगा | यह हमारे लिए शुभ संकेत है ! आज विज्ञापन का महत्त्व इतना बढ गया है किवह हमें पग पग पर मिलता है ! नये नये प्रयोंगो एवं आविश्कारों के कारण विज्ञापन के क्षेत्र में काफी मात्रा में प्रगति हुई है !

वर्तमान समय में मीडिया के माध्यम से हिंदी सम्पुर्ण दुनियाँ में पहुँचा रही है ! हिंदी भाषा तथा साहित्य इंटरनेट के जरिए देश तथा विदेश में बडे पैमाने पर फैल रहा है ! उदगम, कृत्या, प्रतिध्वनि, लेखनी, हिंदी परिचय सृजन गाथा क्षितिज, ताप्तिलोक जैसी कई वेब पत्रिकाएँ हिंदी साहित्य के बेहतर छवि को निरंतर निखार रही है ! इन पत्रिकाओं को विदेश में बडा पाठक वर्ग मिल रहा है ! अनेक वेव पत्रिकाएँ हिंदी के विकास की कल्पना दुनिया में फैलाने लगी है ! इंटरनेट की आधुनिक तकनीक ई बुक, ई –मेल, ई – चॅट, ई – पत्रिका, ई – पुस्तकालय, ई – विडियों ऑडियो पत्रिकाएँ आदि माध्यमों से हिंदी अपना स्थान बना रही है ! इंटरनेट के माध्यम से हिंदी भारतीय और अप्रवासी लेखकों को साहित्य के मूल्यांकन की दस्तक देने का मौका मिला है !

इंटरनेट पर सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आर्थिक उथल पुथल की चर्चा या किसी के साक्षात्कार का ब्यौरा दिया जाता है ! इक्कीसवी सदी की वैश्विक स्थिति में मुनाफा और तेज गति यही अंतिम सच बन गया है ! आज हम देखते है की हिंदी को सूचना एवं प्राद्योगिकी के उपकरणों में हिंदी को सम्मान तो नही मिला बल्कि उसकी व्यावसायिक आवश्यकता को देखकर अपनाया है ! वही जनसंचार के इलेक्ट्रीक माध्यमो मे हिंदी का प्रवेश उसके भविष्य के लिए सुखकारक सिध्द होगी !

हिंदी भाषा में रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध है ! हमने कुछ माध्यमों की यहाँ चर्चा भी की है ! लेकिन वास्तव में प्रश्न यह निर्माण होता है कि हिंदी अगर रोजगार की भाषा है तो आजकल हिंदी का अध्ययन करनेवाले तथा अन्य भाषा का अध्ययन करनेवाले छात्र बेरोजगारों की श्रेणी में अव्वल क्यो है ! अगर हम चाहते है कि हिंदी

भाषा पढने वाले सिर्फ अध्यापन स्तर तक सीमित न रहकर उपर्युक्त क्षेत्रों में अपना कैरियर बनाए तो हमें हमारी सोच विचार धारा में पाठ्यक्रमों में परिवर्तन करना होगा ! हिंदी को रोजगार से युक्त बनाना है तो कुछ सुझाव मुझे लगता है की काम आऐंगे ! जो विषय निम्न प्रकार के हो सकते है !

1. तुलनात्मक साहित्य का अभ्यास
2. व्यावसायिक पाठ्यक्रम
3. जनसंचार, संपर्क विज्ञान, विज्ञापन कला
4. कम्प्युटर कोष, इंटरनेट, ई–मेल आदि को महाविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में अनिवार्य रुपमें पढा या जाय / साथ ही इस विषय को लेकर महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों में कार्यशालाओं का आयोजन कर छात्रों को इस विषय के प्रति आकर्षित किया जाए ! तब कहीं आगे चलकर हिंदी भाषा पढनेवाले छात्र को उपर्युक्त रोजगार के अवसर सहजता से उपलब्ध होंगे

सारांश

समग्रत : कहा जा सकता है कि हिंदी आज केवल साहित्य की स्वांत सुखाय संवेदनाओं को अभिव्यक्त करने का माध्यम नही है ! बल्कि वह सम्पुर्ण मानवता को बौध्दिक, सामाजिक धार्मिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक उत्थान का पर्याय है ! आज हिंदी के प्रयोग कार्यालयीन हिंदी, बाजारी हिंदी, शैक्षिक हिंदी, साहित्यिक हिंदी, वाणिज्यिक हिंदी आदि स्वरुप है ! युवाओं के लिए रेडियो, फीचर लेखन, वृत्तचित्र, संवाद लेखन आदि क्षेत्र अस्तित्व में आए है और जनसंपर्क आधिकारी कार्यक्रम अधिकारी, अनुवादक, हिंदी शिक्षक, आदि पदों के निर्माण से युवाओं को रोजगार के असंख्य व्दार खुल गए है !

संदर्भ ग्रंथसूचि

1. हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार – डॉ. ठाकुरदत्त शर्मा
2. मीडिया विमर्श – दुर्गा प्रसाद अग्रवाल
3. सूचना तंत्र और प्रसारण माध्यम – डॉ. कृष्ण कुमार रत्तू
4. दैनिक भास्कर
5. प्रयोजन मूलक हिंदी – डॉ. लक्ष्मीकांत पांडेय
6. भाषा कौशल विकास – डॉ. शिवाजी वडचकर
7. कम्प्युटर प्रयोग और हिंदी – डॉ. अमरसिंह बधान

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani
PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

CONTACT FOR SUBSCRIPTION

AJANTA ISO 9001: 2008 QMS/ISBN/ISSN
Vinay S. Hatole
Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad (M.S) 431 004,
Cell : 9579260877, 9822620877 Ph: 0240 - 2400877
E-mail : ajanta5050@gmail.com Website : www.ajantaprakashan.com

SPECIAL ISSUE
January 2020

VIDYAWARTA®
Peer Reviewed International Refereed Research Journal

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

स्वयं वित्त पोषित,
एक दिवसिय राष्ट्रीय संगोष्ठी तिथि ४ जनवरी २०२०

हिंदी साहित्य मे कृषक चेतना

संयोजक
हिंदी विभाग

श्री गजानन शिक्षण प्रसारक मंडल, येलदरी कैंम्प द्वारा संचलित, (भाषिक मारवाडी अल्पसंख्यांक संस्था)

तोष्णीवाल कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,

सेनगाव, ता.सेनगांव, जि.हिंगोली

संलग्न
स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

प्रा.एस.जी.तळणीकर
प्र.प्रधानाचार्य

प्रा.प्रमोद घन
संगोष्ठी सचिव

डॉ.शंकर पजई
संगोष्ठी संयोजक

डॉ.विजय वाघ
संगोष्ठी सह संयोजक

38) डॉ. रामदरश मिश्र के उपन्यासों में चित्रित कृषक जीवन
प्रा. तुकाराम वसराम आडे, हिंगोली ||130

39) सरदार पूर्णसिंह का निबंध 'मजदूरी और प्रेम' में कृषक चेतना
प्रा. घन पी. के., जि. हिंगोली ||132

40) कृषक की संवेदनाओं से जुडी बरखा शर्मा की कहानी: हत्या
डॉ. पजई एस. आर., जि. हिंगोली ||135

41) सिनेमा, साहित्य और किसान
प्रा.डॉ. विजय वाघ, जि. हिंगोली ||137

42) कृषक दरिद्रीकरण की शोक गाथा गोदान
प्रा. डॉ. संजय गणपती भालेराव, जि. नांदेड ||139

43) वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसान जीवन का यथार्थ
प्रा.डॉ. दीपक विनायकराव पवार, जि. नांदेड (महाराष्ट्र) ||143

44) हिंदी उपन्यासों में चित्रित कृषक चेतना
डॉ. हनुमंत दत्तु शेवाळे, परभणी(महाराष्ट्र) ||145

45) धूमिल के काव्य में व्यक्त किसान जीवन संघर्ष
डॉ. मुकुंद कवडे, नांदेड (महाराष्ट्र) ||148

46) मैत्रेयी पुष्पा कृत 'चाक' उपन्यास में कृषक व्यवस्था
डॉ. अर्चना पत्की, जि. परभणी ||150

47) हिंदी उपन्यासों में कृषक जीवन
डॉ. प्रवीण देशमुख, बार्शिटाकली ||153

48) स्वांतत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में कृषक जीवन: बदलता परिवेश
डॉ. कमलकिशोर एस. गुप्ता, नागपुर ||156

49) हिंदी उपन्यासों में कृषक चेतना
डॉ. राम सदाशिव बडे, जि. बीड ||159

50) केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में कृषक चेतना
डॉ. वडचकर एस. ए., सोनपेठ ||163

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani
www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

50

केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में कृषक चेतना

डॉ. वडचकर एस. ए.
हिन्दी विभाग,
कै.र.व.म.सोनपेठ

'किसान' महज केवल शब्द नहीं है, यह भारतीय समाज की एक ऐसी 'जमात' है जो पुरे देश भरण–पोषण के साथ भारतीय सभ्यता और संस्कृति का संरक्षक भी हैं! भारत को हम कृषि प्रधान देश कहते है! हमारे देश की अर्थव्यवस्था कृषि पर निर्भर है, शायद वही हमारे अर्थव्यवस्था की रीढ है! किसान खून–पसीना बहाते हुए तपती धूप, मुसलधार बारिश तथा जाडों की कडकती ढंड की परवाह न करते हुए जी–तोड मेहनत करते है! वह इसी मेहनत से केवल खुद का जीविकोपार्जन नही करते बल्कि सम्पूर्ण देश, दुनिया के लिए अन्न उपजाते है! तो भी शहरीकरण और भूमंडलीकरण के चक्कर, और सरकारी नीतियों ने किसान को दोयम दर्जे में पहुँचा दिया है! आज हम देखते है सबसे ज्यादा खराब स्थिति किसानों की है, जो सबके लिए अन्न प्रदान करता है वही स्वयं भूखसे तडप रहा है! तब साहित्य का अपना फर्ज है की देश की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थितिका वास्तविक चित्रण करना भारतीय किसानों की दयनीय दशा का, अत्यंत मार्मिक सजीव एंव यथार्थ चित्रण हम केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में जनवादी कवि के रुप में पाते है!

किसान का सम्पूर्ण जीवन, किसान की आशाएं –आकांक्षाएं, उसके सुख–दु:ख यह सबकुछ धरतीसे जुडा हुआ होता है! तब केदारजी को लगता है! इस धरती के सबसे ज्यादा अधिकार किसान के है, वह धरती का सच्चा हकदार है!

यह धरती है उस किसान की,
जो मिटटी का पूर्ण पारखी,
जो मिटटी के संग–साथ ही,
तपकर गलकर,
जीकर मरकर,
खपा रहा है जीवन अपना,
देख रहा है मिटटी में सोने का सपना..
यह धरती है उस किसान की!

यहाँ कवि कहता है किसान निस्वार्थ भाव से सम्पूर्ण देश के लिए अन्न उपजाता है, वही समाज के व्दारा उगा जाता है! कवि केदारजी की कविता की चित्तन धारा का केंन्द्रीय बिंन्दु है खेती किसानी, जिसके मूल में है बादल! मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन के कवि सूरदास और तूलसीदास भी किसान–चेतना में फर्क है! मध्यकाल में कबीर से लेकर तुलसीदास सामाजिक जागरण था! जिसमें जगी हुई जनता ईश्वर के व्दार पर खडी कर दी जाती थी! आज वर्तमान युग में अपने हाथ से अपने जीवन का भविष्य रचने की शक्ति जनतांत्रिक इजहार होता है! यह बहुत बडा फर्क है! केदारजीने 'यह धरती है उस किसान की' कविता में किसान के स्वत्व की आवाज तो अनोखे ढंगसे उठायी है लेकिन आवाज उठाने वाला किसान–चेतना नही! इसी तरह एक दूसरी कविता है!

'मेरे खेत में हल चलता है'
फाड कलेजा गड जाता है
तड–तड धरती तडकाता है
राह बनाता बढ जाता है!'

इस कविता में ध्यान देने की बात है कि इसमे किसान–चेतना है या कवि की चेतना? किसान तो हल जोतता है, अपना पेट भरने लिए, परिवार के पालन के लिए, लेकिन जब कवि के अनुसार वह किसान धरती का कलेजा फाड कर गडजाता है या राह बनाता है तो उसका स्वरुप बदल जाता है! कवि ने अपनी भाषा में जो बिम्ब खडा किया है, उसमें लगता है कि वह अपने दुश्मन का कलेजा फाड देने में सक्षम है! कवि केदारनाथ अग्रवाल को डॉ.रामविलास शर्मा उगते सुरज के कवि मानते है! यह सुरज मनुष्य के श्रम का सुरज है! केदार की कविता की सरलता हमे

Principal, Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

चित्रात्मकता और गत्यात्मकता से झकझोर कर देती है और लोकजीवन के करीब ले जाकर खडा कर देती है!

यह बांदा है/सूदखोर आढतवालों की इस नगरी में/जहाँ मार काबर, कछार पहुंआ की फसले/कृषकों के पौरुष से उपजा कन—कन सोना/लढियों में लद—लदकर आकर/बीच हाट में बिककर!

केदारनाथ अग्रवाल ने बांदा के किसान जीवन की श्रमशील संस्कृति और सूदखोरी का जिक्र किया है वह मुख्य रुपसे सम्पूर्ण भारत की व्यथा कथा है जो कि सदियों से चली आरही है! जो किसान धरती का सीना फाडकर अन्न उगाता है और जिससे मानव—समाज अपने पेट की आग बुझाता है, वह किसान किसी भगवान से कम नहीं है! उसी किसान—जीवन की दशा का चित्रण कवि इस प्रकार करता है!

जब बाप मरा तब यह पाया
भूखे किसान के बेटे नें:
घर का मलवा, टूटी खटिया/
कुछ हाथ भुमि—वह भी परती
चमरौधे जुते का तल्ला/छोटी,टुटी बुढिया औगी!
दरकी गोरसी बहता हुक्का/लोहे की पत्ती का चिमटा!
कंचन सुमेरु का प्रतियोगी/व्दारे का पर्वत धूरे का/
वनिया के रुपयों का कर्जा/जो नहीं चुकाने पर चुकता/
दीमक, गोजर, मच्छर, माटा/ ऐसे हजार सब सहवासी/

कवि ने यहाँ किसान जीवन की जिन्दगी से जुडे अनेको प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है! किसान के दुखों की दास्तान ह्रदय विदारक है! वह सूखा—वाढ गर्मी सर्दी व भुखमरी को झेलते हुए अपना समस्त जीवन काट देता है! आज चौतरफा किसान आत्महत्या करने को विवर्श है! उनकी बेवसी और करुणा को चित्रित करते हुए कवि कहता है!

मेंरे खेत में हल चलता है!
फाड कलेजे गड जाता है!

किसानों और श्रमिकों से गहरी संवेदना रखनेवाले कवियों में केदार का नाम सदैव अग्रणी पंक्ति में रहेगा क्यों कि इन वर्गो के दु:खों का चित्रण करने के लिए, जिस साहस और सपाट बयानी की आवश्यकता होती है, उसका अछूत भंडार केदारजीके पास है! जनता के पक्ष में लगातार वे ऐसी ही कविताओं का सृजन करते है उनकी भाषा क्रांति है! उसमे किसान बोलता है! उनके भीतर की आग ज्वाला बनने को तत्पर रहती है! जब किसानों के उनके शत्रुओं के बारे में जानकारी नही थी तब सबसे बडे शत्रुके रुपमें जमींदारो को फसल को हडपने वाले शासको को मार भगाने की चेतनता केदार की कविताओं १९४३ में उभरकर सामने आयी है! ये कैसे शासन थे कि किसानों की श्रम से कमाई पुंजी भी उनकी अपनी नहीं थी! किसान पेटभर रोटी के लिए भी मोहताज थे! केदार उनके दु:खो को कुछ इस तरह व्यक्त करते है!

अन्न बटोरो राशि लगाओं
छूले पर्वत चोटी
देश भरे के खेतिहा रखाओं
पेट—पेट भर रोटी!

कवि खेती की बात, धरती की बात और मिटटी की बात करते हुए किसानों के हक में अपने तजुर्बे को बयान करते है! किसानों के ऊपर लिखी जानेवाली इनकी कविताएँ और हल जोतने के बहाने उसके साथ क्रान्ति को संलग्न कर देना वास्तव में केदार के गीतों की ही ताकत है! किसानों के ऊपर लिखे जानेवाले इस गीत का तेवर देखे—

ये धरती है उस किसान की
जो बैलों के कंधे पर बरसात घाम में
जुआ भाग्यरख देता है!
खून चाटती हुई वायु में
पैनी कुसी खेत के भीतर दूर कलेजे तक ले जाकर
जोत डालता है मिटटी को!

कवि केदारजी श्रम के पुजारी है! मजदूरी करनेवाले उनके कविताओं के नायक है! मजदूरी करनेवालों के प्रति उनकी कविता में अस्था है—

ऐसा तन है! छोटा है दुवला—पतला है!
मिटटी का कच्चा पुलता है!
लेकिन पौरुष का अजेय वह सिंह सदन है!

भारतीय परिस्थितियों में प्रगतिशील चेतना को व्यक्त करने के लिए मजदूरों से अधिक किसानों के लिए सोचने के लिए सोचने की आवश्यकता थी क्यों कि शोषण के चक्र में पिस रहे भारतीय किसान का

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth, Dist. Parbhani

श्रमिक मजदूरों से अधिक है। इसी लिए केदारजीने अपनी प्रतिबध्दता इसी किसान जीवन की प्रति व्यक्त की है–

आज का सूरज नहीं है प्रात: का है,
और प्राची का कलेजा उठ रहा है!
रात का भीगा भयानक आँसुओं से
धूप कर किरनें सुनहली हँस रहा है!
खेत में जो अन्न कच्चा ही खडा था
आज कंचन सा मधुर वह पक रहा है!

भारतीय किसानों में परिपक्व हो रही इस क्रांति चेतना की ओर संकेत करते हुए केदारनाथ इसी वर्ग में व्याप्त अन्धविश्वासों और रुढियों पर चुटकी भी लेते है! कवि केदारजी श्रमिक किसान के लिए रचनाकार के मन में जो आदर होना चाहिए, जिसकी जिन्दगी को व्यक्त करने और बेहतर बनाने के लिए वह क्रांतिकार मात्र नहीं पक्षधर बन कर खडे हो जाते है! केदारनाथ अग्रवाल उस धरती के कवि है जो त्रिलोचन की धरती से थोडा अलग है! लगभग पठारी क्षेत्र, जहाँ वर्षा के अभाव में धरती का सीना दरक उठता है! ऐसे परिवेश से होकर निकले केदार के यहाँ बादलों की तनिक भी गरज कवि की संवेदना को प्राणवायु से भर देती है! जलाभाव से ग्रस्त इस इलाके में कदाचित नदीके लिए कवि के मन में इसलिए प्रेम भरा है!

किसानों, मजदूरों के लिए गीत लिखनेवाले उनके संघर्षो के चित्र उकेरने वाले केदार को कविवर राजेश जोशी ने नगरिय संवेदना का कवि माना है! किन्तु यह कथन मान्य नही हो सकता! कवि केदारनाथ अग्रवाल शहरी आधुनिकता का कवि नहीं है! नगरीय जीवन की यथार्थता से सबको अवगत कराया है! प्रेमचंद की तरह इनका जन्म किसान परिवार में नही हुआ था किन्तु अपनी सहज स–ह्रदयता के कारण ही वे किसान जीवन में धुल–मिल गये थे! थ्कसान के प्राकृतिक परिवेश के वे कवि रहे है! भारतीय किसान–मजदूरों में जो व्यापक असंतोष और आन्दोलन उभरे उसका वास्तव चित्रण उन्होने 'राम राज्य' नामक लम्बी कविता में किया है! कविता किसानों की पीडा मनुष्य की आत्मा को स्पर्श करती है!

राम राज्य में अब की रावण नंगा होकर नाचा है,
सूरत शकल नहीं है पैसा बदला केवल ढांचा है
लाज शरम रह गयी न बाकी गांधीजी के चेलों में
फूल नहीं, लाठियां बरसती रामराज्य के जेलों में

केदारनाथजीने धरती और किसान के सहज किन्तु गहरे संबंध को अपनी कविताओं में उजागर किया है! 'मेरे खेत में हल चलता है' तथा मेरा मेरा श्रम नामक कविताओं में किसान का श्रम, उसका संघर्ष मनुष्य की चेतना को स्पर्श करता है! तो 'पैतृक सम्पति' नामक कविता में हाडतोड करनेवाले किसान की व्यथा को प्रस्तुत किया है!

संदर्भ सूची:–

१. संचारिका पत्रिका – अप्रैल,मई–जून २०११
२. गुल मेंहदी
३. फूल नहीं रंग बोलते है (भूमिका)
४. कहे केदार खरी खरी
५. प्रगतिशील काव्यधारा और केदारनाथ अग्रवाल
६. आलोचना – त्रैमासिक २०००
७. साहित्य अमृत – पत्रिका २०११

□□□

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani
PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani
PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

Cosmos
IMPACT FACTOR
5.234

Indexed

Indexed

IMPACT
6.021
iijif
FACTOR

Publisher & Owner

Archana Rajendra Ghodke

Harshwardhan **P**ublication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh, Tq.Dist.Beed-431 126

(Maharashtra) Mob.09850203295

E-mail: vidyawarta@gmail.com

www.vidyawarta.com

ISSN 2319 9318

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648 | Impact Factor - 7.139 | Indexed (SJIF)

February 2020 Special Issue-23 Vol.2

The Role of Language and Literature in Unity in Diversity

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editor
Principal, Dr.Aqueela Syed Gous

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 23 , Vol. 2 February 2020 | Peer Reviewed SJIF | ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

Index

1. हिंदी साहित्य एवं समाज में सिनेमा का योगदान — 1
   प्रा.वाघमारे के.एच.
2. हिंदी भाषा और मीडिया — 3
   डॉ. अशोक अंधारे
3. वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी — 5
   प्रा. डॉ. बायजा कोटुळे
4. अनुवाद का अध्ययन — 7
   प्रा.डॉ.कुलकर्णी वनिता बाबुराव
5. विभूति नारायण राय के 'तबादला' उपन्यास में राजनीति — 9
   डॉ. मुरलीधर लहाडे
6. सोशल मीडिया और हिंदी का बढ़ता प्रभाव — 11
   कारामुंगीकर बालाजी गोविंदराव
7. अनुवाद अध्ययन — 13
   प्रा. डॉ. मृणाल शिवाजीराव गोरे
8. "स्तंभ लेख और स्तंभ लेखक की विशेषताएँ" — 15
   प्रा. डॉ. महावीर उदगीरकर
9. भाषांतराचे स्वरुप आणि मराठी साहित्य प्रकाराचे भाषांतर — 17
   दुष्यंत आनंदराव शिंदे
10. "अनुवाद की अवधारणा" — 20
    डॉ.राम सदाशिव बडे,
11. वैश्विकरण के संदर्भ में 'रेहन पर रग्घू' उपन्यास (काशीनाथसिंह) — 22
    प्रा. जाधव जे. बी.
12. हिन्दी साहित्य की पत्रकारिता — 24
    डॉ. वडचकर शिवाजी
13. हिन्दी भाषा ओर मीडिया — 26
    प्रा.डॉ. रेखा मुळे,
14. भाषा और साहित्य — २८
    प्रा. डॉ. भिसे संगीता दिलीपराव
15. हिन्दी भाषा ओर साहित्य — 33
    बोडके ज्ञानेश्वर विनायकराव

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 23 Vol. 2
February 2020

Peer Reviewed
SJIF

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

हिन्दी साहित्य की पत्रकारिता

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

डॉ. वडचकर शिवाजी
हिन्दी विभागए कै. र.व.म.सोनपेठ

बडी अजब और अजीब बात है कि हिंदी मे।जो साहित्य और पत्रकारिता एक –दूसरे के संगी – साथी रहे है । साहित्य और हिन्दी दोनो।का गहरा संबंध रहा है।इसमे।समाज का प्रतिबिम्ब दृष्टिगत होता है ।क्योंकि सामान्यतः साहित्य का मूल आधार मानवीय जीवन होता है ।साहित्यकार मानवीय जीवनमूल्यो।की स्थापना अपनी साहित्यिक कृति मे।करता है और पत्रकार उसे व्यावहारिक आयाम देता है ।इसलिए उसे समाज का चौथा स्तंभ भी माना गया है ।इसकी वजह से आज हमे।विश्व एक परिवार जैसा लगने लगा है ।प्रांत की राजधानी से लेकर दुनियॉ।के कोने की जानकारी हमे।घर बैठे मिल रही है।यही बात हमे।100–150 वर्ष पहले किवंदतियोके रुप मेस्वीकार करनी पडती थी ।समाज मे।घटित घटनाओ।को परखना और उसका वर्णन करना मानव जीवन की सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति रही है ।इसी भावाभिव्यक्ति के कारण जनसंचार माध्यम का अविस्कार हुआ ।आज पत्रकारिता साहित्य के विभिन्न अंगो।की भॉति एक स्वतंत्र विधा बन चुकी है ।साहित्यिक पत्रकारिता केवल साहित्य का विवेचन नहीकरती । वह मानव समाज, मालिक मजदूर के बीच की महत्त्वपूर्ण कडी है । आज पत्रकारिता में उपन्यास से लेकर रेखाचित्र तक सभी विधाऍं शामिल है ।वहपत्र जिसमें विचार हो, समाचार हो, इस बात को गांधीजीने अपने शब्दों में विशद किया है – " पत्रकारिता का पहला उद्देश जनता की इच्छाओं और विचारों को समझना तथा उन्हे व्यक्त करना है ।दूसरा उद्देश जनता के वांछनीय भावनाओं को जागृत करना है ।" यानी समाज में परिवर्तन निर्माण करना, यह महत्त्वपूर्ण कार्य पत्रकारिता के माध्यम से किया जाता है । इस विषय को लेकर छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा कहती है " पत्रकारिता एक रचनाशील विधा है । इसके बगैर समाज को बदलना असम्भव है ।अतः पत्रकारों को अपने दायित्व और कर्तव्यों का निर्वाह निष्णपूर्वक करना चाहिए क्योंकि उन्हीं के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जाएगा ।" साहित्य की बढती हुई गतिविधियॉं भी

अखबारों के समान साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक पत्रिकाओं के पन्नों पर साहित्य की बढती हुई गतिविधियॉं भी मीडिया और साहित्य दोनों में भी है । किसी एक बैठक में 'हिन्दुस्तान अखबार' के प्रधान संपादक शशि शेखरजी से इस बात को लेकर एक सवाल पूछाथा तो उन्होने कहा –" आमतौर पर लोग सोचते हैं कि साहित्यकार जितना बढिया लिखते है, उतना ही अच्छा उनका व्यक्तित्व होगा, लेकिन जब उनका मानवीय पक्ष देखते हैं तो वह उतना महान नहीं दिखता । यों जरुरी नहीं है कि कोई भी व्यक्ति निजी जिंदगी में महान ही हो, क्योंकि वह भी इनसान होता है । मैं साहित्यकारों के प्रति कोई विकृति नहीं रख रहा, नही कोई द्वेष है, पर मैंने नजदीक से अनुभव किया है कि साहित्य के लोग अपनी लिखत में बडी – बडी बातें तो करते है, लेकिन असल जिंदगी में जिम्मेदारी निभाते हुए नहीं दिखाई देते ।"

हिन्दी साहित्य की पत्रकारिता साठ के दशक में जोर – शोर से उभरती आ रही है । हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता के वर्तमान स्थिती की ओर बढने से पहले उसके गौरवशाली इतिहास और उसकी प्रवृत्तियों पर एक नजर डालना आवश्यक है । 30 मई 1926 को देश का पहला हिन्दी समाचार – पत्र 'उदंत– मार्तंड' साप्ताहिक प्रकाशित हुआ, संपादक, पं. युगलकिशोर शुक्ल पारखी और सहृदय कवि थे । इनकी कविमन की झलक 'उदंत– मार्तंड'में देखने मिलती है ।'उदंत– मार्तंड' के बाद हिंदी में प्रकाशित होनेवाले अन्य अखबारों में साहित्यिक पत्रकारिता का साफ – साफ चेहरा दिखता है । भारतेंदु जी की 1968 में निकली 'कविवचन सुधा' पत्रिका । इसके बाद 1973 में'हरिश्चंद्र मैगजीन', 1974 मे 'हरिश्चंद्र चंद्रिका'ने साहित्यिक पत्रकारिता की राह आसान बनाई है । भारतेंदुजी से पहले प्रकाशित होने वाली पत्र – पत्रिकाओं के फलस्वरुप जा रचनाऍं सामने आ रही थी, उन्होंनें लोगों में खबर पढने के प्रति उत्सुकता तो जगाई, साथ ही मनोरंजन और साहित्यिक रचनाओं को पढने की ललक पैदा करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई । विशाल पाठक वर्ग तैयार कर उसे सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक रुप में जागरुक और बहुत हदतक परिपक्व बनाया ।

भारतेंदुयुगीन साहित्यिक पत्रकारिता ने बहुत ही गौरवशाली इतिहास दिया है । उन दिनों देश ब्रिटीश साम्राज्यवादी सत्ता के आधीन था और वह विदेशी साम्राज्यवादी सत्ता न केवल देश की जनता का आर्थिक शोषण कर रही थी बल्कि सांस्कृतिक तौर पर भी भारतीयों की जडो को खोखला करने लगी थी । यह वास्तविक सत्य है कि आर्थिक – शारीरिक कमजोरी से उबारा जा सके । कहावत है कि शास्त्र का घाव भर जाता है, बात का घाव नहीं भरता अंग्रेजोंने सीधे – सीधे शस्त्रों"का घाव नही किया, जितना भारतीय समाज के देशीपन तथा मौलिकता का संहार करने लगा । उनके पास ज्ञान विज्ञान संबंधी बाते मनुष्यता के लिए हितकारिणी थी । उनका कुटिल शासकवर्ग भारतीय समाज पर प्रहार करता । तब ऐसी परिस्थिती में देशी पत्रकारिता का जन्म हुआ । भारतिय सांस्कृतिक परम्पराओं, स्वास्थ संवेदनशील ज्ञान आदि को स्वीकार करते हुए, अंग्रेजी साम्राज्य के अधूरे ज्ञान के सामने प्रश्नचिन्ह लगाकर भारतीय संस्कृति के मानवीय, गरिमापूर्ण एवं संघर्ष की संस्कृति वाले विषयों को लेकर भारत के गौरवपूर्ण पृष्ठों की रचना कर समाज को आत्मिक शक्ति से भरने का प्रयास होने लगा । यह एक प्रकार से संघर्ष था, जो विचारों की दुनिया में च

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 23 Vol. 2 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
February 2020 | SJIF | Impact Factor : 7.139

और देश के विवेक सम्पन्न जागरुक पत्रकार और उनकी जनपक्षधर पत्रकारिता निरन्तर चलती रही । इसमें '1938 रुपाभ' नामक सुमित्रानंदन पंत और नरेन्द्र शर्मा संपादक का काम किया आज का युग वैज्ञानिक युग है जा – बिरादारी और रस्मों रिवाजों की प्रासंगिकता है । इनकी समाप्ति का मतलब है हिन्दू संस्कृति की समाप्ति । हिन्दू संस्कृति के भीतर जो मानवीय ऱ्हास दिखलीई देता है, वह सामाजिक असहयोग के कारण है । यह मानवता तभी समृध्द हो सकती है जब कि हमारे समाज में आपसी सहयोग हो ।

बल मुकूंद गुप्त और महावीर प्रसाद द्विवेदी दोनों ने भी भारतेंदु जी के वीरासत में 1900 में 'छत्तीसगढ मित्र' जैसा अद्भुत पत्र शुरु किया । इसी समय 'माधुरी' नामक पत्रिका के संपादक मंडल में प्रेमचंद रहे है । 'समालोचक' 1901 – चंद्रधर शर्मा गुलेरी, 'इंदु'– जयशंकर प्रसाद 'प्रभा'– माखनलाल चतुर्वेदी, गणेश शंकर विद्यार्थी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' 'चाँद'– रामरख सहगल आदि के नामों को लिया जाता है । तो प्रगतिवादी युग में साहित्यिक पत्रकारिता क्रांतिकारी रुप सामने आया है । 1953 में डॉ. रामविलास शर्मा, के प्रगतिवादी लेखक संघ के पद से हट जाने के बाद कुछ पत्रिकाएँ बंद हो गई । और इसी दौर में साहित्यिक पत्रकारिता में विशिष्ट अवदान करनेवाली में प्रेमचंद की 'हंस' यशपाल और सुमित्रानंदन पंत ने 'विप्लव', 'रुपाभ' निकाली । अमृत्तलाल नगर ने 'चकल्लस' और उच्छृंखल, रामविलास शर्मा की 'समालोचक' मुक्तिबोध की 'नया खून' इस दौर में महत्त्वपूर्ण पत्रिका रही है । प्रगति का द्वंद्व और प्रगति विरोधी विचारधाराओं के दौर में नागार्जुन, रामविलास शर्मा, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल, मुक्तिबोध, हरिशंकर परसाई, शमशेर बहादुर सिंह, नामवर सिंह जैसे महान साहित्यकारों के कृत्रित्व को देखना –समझना पडता है सम्पादक की सबसे बडी भूमिका देश को दिशा देने की होती है । अब यह उसकी दृष्टि, संस्कार, अनुभव, अध्ययन और समझपर निर्भर करता है कि वह अपने समाज और व्यक्ति के संबंधो को किस रुपमें देखते है । उसी के अनुरुप अपने पत्रिाक से समाज को दिशा प्रदान कर सकता है । भारत के साहित्यिक पत्र – पत्रिकाओं चार रुप सामने आते है । सरकारी पत्रिकाएँ, औद्योगिक घरानों की पत्रिकाएँ, लेखक संघो या स्वायत संस्थानों की पत्रिकाएँ और निजी स्तरपर निकलने वाली पत्रिकाएँ । हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता के समकालीन स्वरुप को निर्मित करने में अनेक पत्रिकाओं व सम्पादकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है । 'कल्पना प्रतीक', 'नयी कविता', 'कृति', 'धर्मयुग','सारिका','साप्तहिक हिदुस्तान', 'कादम्बिनी','नवनीत','नया प्रतीक','लहर','बिन्दु','कविता','शब्द',क्यों जैसी पत्रिकाओं ने समकालीन साहित्यिक पत्रकारिता के लिए आधारभूमि निर्मित की है । किसी भी भाषा की साहित्यिक पत्रिका के लिए आधारभूमि निर्मित की है । किसी भी भाषा की साहित्यिक पत्रिकाएँ उसके सृजन का प्रवेशद्वार होती है । एक दृष्टिवान साहित्यिक पत्रकार अपने समय के सृजन को प्रोत्साहित करता है । समकालीन साहित्यिक परिदृश्य में एक साथ कई दृष्टियों से साहित्य रचना हो रही है, किन्तु उनमे प्रमुखता पूँजीवादी व्यवस्था की सर्जना पर है । इस कार्य मे एक सच्चे पत्रकार का आराध्य मनुष्यता होती है फिर चाहे वह राजनिती, कला, साहित्य या ज्ञान – विज्ञान संस्कृति के किसी क्षेत्र विशेष में काम करता हो । साहित्य – सृजन की बारीकियों और पेचीदगियों को समझ नपाने की वजह से साहित्य का एक संकलनकर्ता मात्र होकर रह जायेगा । एक साहित्य – सम्पादक की भूमिका केवल सम्पादक – कलातक ही सीमित नही होती, बल्कि वह एक समर्थ आलोचक – चिन्तक से किसी मायने मे कम नही होती ।

संदर्भसूची :

1. संचार सिध्दांत की रुपरेखा – डॉ. प्रेमचन्द पातंजलिं
2. हिन्दी साहित्य के विविध आयाम – डॉ. बिमलेश
3. हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियॉं – डॉ. शिषकुमार शर्मा
4. साहित्य अमृत – अगस्त 2015
5. जनसंचार माध्यमों में हिन्दी – डॉ. शोभा सुखलाल दिव्यवीर
6. मधुमती – जनवरी 2010

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

Current Global Reviewer

Indexed (SJIF)

ISSN 2319-8648

Impact Factor- 2.143

ISSN 2319-8648

Chief Editor
Arun B. Godam
Latur, Dist. Latur-413512
(Maharashtra, India)
Mob. 8149668999

Publisher
Shaurya Publication

हिंदी साहित्य की वर्तमान विचारधारा

: मुख्य संपादक :

प्राचार्य डॉ. किशन पवार

: सहसंपादक :

डॉ. गोविन्द पांडव

प्रा. संतोष शिंदे

प्रा. सुजाता हजारे

2019 - 2020

अनुक्रमणिका

अ.क्र	नाव	शीर्षक	पृ.क्र.
१.	प्राचार्य डॉ. सय्यद शौकत अली	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी	४
२.	प्रा.डॉ.बळीराम व्ही.राख	वर्तमान का हिंदी गज़ल साहित्य: अभिव्यक्त विर्मश	८
३.	प्रा.रत्नमाला देशपांडे	आधुनिक हिंदी कविता में प्रकृति विमर्श	११
४.	डॉ. गोविन्द पांडव	कोर्ट मार्शल नाटक की संवेदना	१६
५.	प्रा.डॉ.वंदन बापुराव जाधव	ग्रांमाचलिक परिवेष के बदलते स्वरुप: बीस बरस	२०
६.	डॉ.बाबासाहेब कोकाटे	हिन्दी साहित्य में महानगरीय जीवन	२४
७.	प्रा. श्रीमंत जगन्नाथ गुंड	हिंदी साहित्य और वैश्विकरण	३०
८.	प्रा.शिवशेटटे शंकर गंगाधरराव	वैश्वीकरण और हिंदी साहित	३६
९.	डॉ. मनोहर जमधाडे	'समकालीन हिंदी कविता में ग्राम तथा महानगरीय बोध	४१
१०.	प्रा.डॉ.जोशी संजय व्यंकटराव	हिन्दी साहित्य की वर्तमान विचारधारा विमर्श के लिए प्रस्तुत शोधालेख जयशंकर प्रसाद के नाटकों में राष्ट्रीय भावना	४३
११.	डॉ कलशेट्टी एम. के.	हिन्दी लघुकथाओ मे वर्तमान विचार धारा	४७
१२.	डॉ. वडचकर एस एम.	केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में प्रकृति	५१
१३.	डॉ.राम सदाशिव ब[illegible]	स्त्री विमर्श: हिंदी साहित्य के संदर्भ में	५५
१४.	डॉ. प्रियदर्शिनी	रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना और काव्य सौंदर्य	६१
१५	प्रा.डॉ. डमरे मोहन मुंजाभाऊ	हिंदी की आदिवासी कहानी में स्त्री विमर्श	६७
१६	संभाजी शामराव गजगे	ऐलान गली जिन्दा है में सामाजिक संघर्ष	७३
१७	डॉ.नितीन बी.कुंभार	प्रेमचंद के उपन्यासों में मानवतावाद का दर्शन	७८
१८	शिंदे संतोष सखाराम	गीतांजली श्री की कहानियों मे स्त्री – विमर्श	८१
१९	किशोर श्रीमंत ओहोळ	मिथिलेश्वर के 'सुरंग में सुबह' उपन्यास में राजनीतिकता	८४
२०	बबीता कुमारी	आदिवासी हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव और विकास	८८
२१	प्रा. रईसा मिर्झा	समकालीन कथा साहित्य में नारी संवेदना	९५
२२	नदाफ अजरोददीन	वैश्विकरण में हिंदी का योगदान	१००

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में प्रकृति

डॉ. वडचकर एस.ए.
कै. रमेश वरपुडकर महा. सोनपेठ जि. परभणी
मो.नं. : ८९८३८४८७८८

Warpudkar (ACS) College, Sonpeth, Late Ramesh
Dist. Parbhani

मानव और प्रकृति का हमेषा का साथ रहा है !दोनों में सौंदर्य भरा रहता है !मानव ने जब पहली बार आँखे खोली होगी, तो अपने सामने प्रकृति को ही पाया होगा !विषाल प्रकृति के सामने मनुश्य अपनी लघुता को आचरज से अनुभव करता रहा होगा !पल पल प्रकृति के बदलते रुपों को उसने देखा ! प्रकृति के विषाल सामर्थ्य को उसने देखा तबवह प्रकृति के बदलते रुपों पर सोच विचार करता रहा !कभी कभी उसे अपनी सहचरी भी मानने लगा इस संदर्भ में किरण कुमारी गुप्ता ने लिखा है कि " मानवमांगलिक भावना का अनुभव करने लगा !"मेघ अमृत समान जलधाराओं की वर्शा वृक्षपर करते है !सुर्य आग उगलता है !तो कभी ठंडसे ठुठरन होती है !प्रकृति में परिवर्तन का एक चक्र है !इन सब घटनाओं पर वह चिंतन करने लगा " मानव – मस्तिश्कअधिकाधिक विचारषील होता गया और उसकी चिर सहकारी प्रकृति के विभिन्न रुप उसके अंतरंग मित्र बन गये !"

प्रकृति के विभिन्न रुपों की खोज करना एक कठिन कार्य है ! प्रकृति का चक्र मनुश्य को भी गतिमान रखता है ! प्रकृति का निरंतर बदलना प्रकृति को भी सौंदर्य प्रदान करता है !ऐसे सौंदर्य को कवि अपने काव्य में बॉधने का प्रयत्न किया करते है !पास्त्रों ने इन सुंदर रुपों को छह रितुओं में वर्गीकृत किया है !तो हिंदी के मूर्ध्दन्य कवियों ने अपनी काव्य रचनाओं को सदैव प्रकषति रस की चाषनी में डुबोकर अपनी लोकप्रिय रचनाएं प्रस्तुत की है !

केदारनाथ अग्रवाल ने राजनीतिक चेतना, प्रकृति चित्रण और समाज एवं मानव को अपनी कविता का विशय बनाया है !बॉदा के पास बहनेवाली केन नदी ने केदारजी के साहित्य में परिवेश की प्रेम की धारा बहादी !जहॉ नदी, पहाड, चारो तरफ फैले खेत मैदान, ताल तलैया का प्राकृतिक आकर्शण इनकी कविता में देखने को मिलता है,वही निरालीजी के चतुर चमार, बिल्लेशर बकरिहा की तरह राम पदारथ, रामनिहोर, बदलेव विधाता आदि ग्रामीण जनका वर्णन भी हुआ है !इनकी कविता में प्रकृति के गॅवई स्वरुप का चित्रण है !यदि पंतजी प्रकृति के सुकुमार कवि हैं तो केदारजी को यथार्थ और सहज आत्मीय पैली का कवि कहा जा सकता है !इनके प्रकृति के सहज चित्रण को लक्ष्य करते हुए रामविलास पर्मा लिखते है, " प्रकृति के

साथ मनुष्य का सहज प्राणिमात्रकी संबंध केदारकी कविताओं में जैसा व्यक्त है है वैसा वह संसार के बडे से बडे कवियों में देखने को नही मिलता !”इनकी कवि ग्रामीण जीवन की सहज गाथा है !जहाँ एक ओर गाँव की प्रकृति के समस्त रूपों दर्शन होते है वही ग्राम्य जीवन के संवेदना के चित्र भी मिलते है !इनकी कविता प्रकृति किसानी जीवन से प्रेरित है !बिंब विधान, खासकर के कृशक जीवन पर आ धारित घरेलू है और यह सिर्फ साहचर्य का नारा मात्र न होकर भोगे हुए जीवन यथार्थ चित्रण है !साथ ही प्रकृति चित्रण में जनवादी स्वरुप भी है !कवि पीप मुरैठा बांधे चना जनवादी विचारधारा को दरपा रहा है और प्रकृति के उपदानों बुंदेलखंडी रस्म – रिवाजों के साथ केवल खेतों, मेंडों सारस और सुग्गों तक सीमित नही रहे. इनकी प्रकृति की संपूर्ण रमणीयता गाँव के साथ जुडी हुई है !इसमे पु गाँव, गाँव के किसान है !इन्हे स्वीकार करते हुए स्वत: लिखते है – कविता में आग नदी, पहाड, वन, धूप छाँव, सुरज, चाँद सितारे और ऋतु परिवर्तन का दृष्य न हो और उनमें लौकिक वस्तुओं के रंग रुपों का बिंब न हो, तो बेचारा पाठक कैसे अपने प्रांत, प्रदेश और देश को देख सकता है और कैसे उससे प्यार कर सकता है !यह कविने एक सुबह का दृष्य खडा किया है, जिस कें बिंब में कच्चे घरों की भीत को कवि भूल नहीं पाता –

“धीरेसे पॉव धरा धरती पर किरणों ने
मिट्ठी पर दौड गया लाल रंग तलुओं का
छोटासा गॉव हुआ केसर की क्यारी सा
कच्चे घर डूब गए कंचन के पानी में !”

Dist. Parbhani

केदारनाथ जी विरले कवि है, जहाँ प्रकृति अपने यथार्थ रुप में गतिशील है
- हिरण चौकडी भरता चला गया / धूप की चादर सिमटकर खो गई !”

केदारनाथ युग चेतना प्रगतिवादी कवि थे ! प्रत्येक युग की रचना धर्मिता अपने युग और परम्परा के अनुरुप होती है !कवि समाज में होनेवाले बदलाव, क्रमिक विकास के साथ ही उस युग की तत्कालीन विपिश्ट परिस्थिती, उसकी मौलिकता को भीअपने में समाहित करते हुए आगे बढता है !यानि आपके काव्य में जीवन का व्यापक समावेष स्पश्ट दृश्टिगोचर होता है !प्रकृति को मानव आदिम सहचारी के रूप में मानता आया है और वह मानव को साथ भी देती आई है !प्रकृतिसे ही मनुष्य के प्रथम आल्हाद पाया और उसी के अनेक व्यापारों को अपनी भावना का विशय बनाकर काव्य लेखन किया है !कवि केदारजीने अपने काव्य में प्रकृति की एक एक धडकन को समाहित किया है !साथही आपके काव्य में ग्राम जीवन और लोकजीवन

का गहरा लगाव भी रहा है !किसानों का दु:ख –दर्द, सूखा, अवर्शा तथा भूखमरी जैसे विशय को व्यक्त किया है !मानों केदारजी प्रकृति के माध्यम से जीवन की कोमलतम अनुभूतियों तक पहुँचते है !'सावन का दृष्य'नामक कविता के माध्यम से कवि ने प्रकृति के सुन्दर एवं स्वतंन्त्र चित्रों को प्रस्तुत किया है !

" सावनकी गुदगुदी हवासे,
मस्त हुआ पट्टे का चोला,
पेड तले महुए के बैठा
लगा बजाने बॉसुरी मनकी !"

यह कहना उचित होगा कि सूरदास का लोक जहॉ गोलोक है, वही केदारनाथ जी का लोक प्रकृति में पल पल स्पंदित लोक है, जिसकी चेतना सामाजिक अर्थवत्ता से जुडी हुई है !जीवन से निराश होकर भी फिर से जीने की आपा केदारनाथजी को प्रकृति से ही प्राप्त होती है और यहीं से मिलती है नई सौंदर्य चेतना !केदारनाथजीने नागार्जुन के समान वनस्पती – जगत् एवं मनुश्य – जगत् के मध्य जीवंत संबंध की खोज की है !

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

"दु:ख ने मुझको
जब जब तोडा
मैने अपने टूटेपन को
कविता की ममता से जोडा
जहॉ गिरा मैं
कविताओं ने मुझे उठाया
हम दोनों ने
वहॉ प्रात: का सूर्य उगाया !"

कवि केदारनाथ जी प्रकृति से कोई शिकायत नही करते!वे मानव को प्रकृति की सर्वोत्तम कृति के रुप में देखते हैं !उनके प्रकृति वर्णन की सबसे बडी विषेशता उसकी आंचलिकता है !साथ ही अपनी कविताओं में प्रकृति को बहुत ही महत्वपुर्ण स्थान रहा है !अपनी अनुभूतियॉ और नैसर्गिक सरल भाशा व्दारा प्रकृति में मनोरम छबियॉ दिखाई देती हैं !इसका एक छोटासा उदाहरण बादल की अजब मस्ती और ताजगी भरा कवि 'गर्रनाला' कविता व्दारा व्यक्त करता है !

"काली मिठ्ठी काले बादल का बेटा है!
टक्कर वा टक्कर देता, धक्के देता !

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

रोडो से वह बेहारे लोहा लेता है !
नंगे, भूखे, काले लोगों का नेता है !"

केदारजी की प्रकृति में इतनी आत्मीयता एवं सहज भावात्मकता है, कि मनुष्यता का गीत रचकर, सामाजिक विसंगतियों के उद्घाटन में वे सफल है!समाज में जितनी जडता, स्वार्थवाद, बंधन है, प्रकृति इससे अछुती है !इसीलिए केदारजी प्रकृति को प्रेरणादायी षक्ति के रुप में देखते हैं किंतु इसे न तो मानवेत्तर मानते हैं न मानवोपरि !इसीलिए आज हमें केदारजी के समान कवियों की जरुरत है, वह प्र ब्रम्हा है, वह निर्माण कर्ता है जिसने करोडों वर्श में चेतना अर्जित की है !मनुष्य ने उससे आप एक नई सृश्टि करते हैं !इसलिए कवि ज्यादा दिन जीता है !को केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं में प्रकृति उनकी प्रेरक और सहाय्यक सिद्ध हुई है जिसके कारण इनकी कविताएँ हमें बराबर उल्लास और सौंदर्य की ओर लेकर चलती है !केदारनाथ सिंहने अपनी कविता में पोशण, अन्याय, विशमता आदि सामाजिक यथार्थ को चित्रित करते हुए प्रकृति का सहारा लिया है !अपनी सहज भाशा द्वा प्रकृति में जीवनगत अनुभूतियों को देखा है !इसीलिए आपका प्रकृति चित्र समकालीन कवियों में बेजोड है !इसके बारे में डॉ. प्रेमषंकर का मत दृश्टव्य —"जिन्दगी के यथार्थ से उन्होने अनुभूति के स्तर पर जाकर रचनाएँ लिखीं !अप प्रकृति चित्रों के लिए तो वे हमेषा याद किये जायेंगे !"केदारजीकी कविता में प्रकृ किसानी जीवन से प्रेरित होनेसे कविता में बिम्ब इतने प्रगतिषील लगते है, कि म कविता पढते समय हम ग्रामीण जीवनपर फिल्म देख रहे है !बादलों पर और बाद से संदर्भित इन्होने दर्जनों कविताएँ लिखी है !यह कविताएँ प्रकृति चित्रण के स उपादान के रुप में नही है, ये जीवन के पारावार के रुप में है !आपका प्रकृति ा बहुत देराज और लोक — सम्पृक्त है !

संदर्भ सूची

१.	प्रगतिशील काव्य — मासिकपत्रिका—		२०११
२.	टालोचना	—	२०११
३.	साहित्य अमृत —फरवरी	—	२०११
४.	केदारनाथसिंह अग्रवाल	—	फुल नही रंग बोलते है
५.	हिन्दी काव्य और वर्षा	—	डॉ. वडचकर शिवाजी

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani